नामदेव और कबीर : दार्शनिक विचारधारा

उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद

पी-एच. डी उपाधि के हेतु

प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

1980

अनुसन्धानकर्ती

श्रीमती कमला केतकर एम. ए.

प्राध्यापिका, म. ना. वनिता महाविद्यालय, हैदराबाद.

निर्देशक

डा. रामनिरंजन पाण्डेय

एम. ए., (हिन्दी, संस्कृत) पी-एच. डी.,

साहित्य वेदान्त शास्त्री, एल. एल. बी.

भूतपूर्व अध्यक्ष, (हिन्दी विभाग)

उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद.

RamKumar Narwes' Copy.

Dr. Received on 16.1.81

Report and remuneration bill

sent on 24.1.81

नामदेव और कबीर : दार्शनिक विचारधारा

उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद
पी-एच. डी उपाधि के हेतु
प्रस्तुत
शोध–प्रबन्ध

1980

प्रस्तुतकर्त्री
श्रीमती कमला केतकर
विद्यालंकार, एम. ए.
प्राध्यापिका, स. ना. वनिता महाविद्यालय, हैदराबाद.

Forwarded
12-9-80

Dr. K.K. Khandelwal
B.A. (Hons), M.A., Ph.D.
HEAD
Department of Hindi
Osmania University,
HYDERABAD-500007.

निर्देशक
डॉ. रामनिरंजन पाण्डेय
एम. ए., (हिन्दी, संस्कृत) पी-एच. डी.,
साहित्य वेदान्त शास्त्री, एल. एल. बी.
भूतपूर्व अध्यक्ष, (हिन्दी विभाग)
उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद.

CERTIFICATE

Certified that this Thesis is a bonafide record of work done by Mrs. Kamla Ganeshkar Ketkar, Research Scholar, Hindi, under my guidance and supervision and this Thesis has not formed in whole or part, the basis for the award of any Degree, Diploma or any other similar degree or distinction.

Dr. RAMNIRANJAN PANDEY
(Retired Head of the Department of Hindi)
Osmania University, Hyderabad
A. P.

Retd. Professor & Head,
Dept. of Hindi, Osmania University.
HYDERABAD-500007.

Hyderabad

Dated: 12-9-1980

I
I.

विषयानुक्रम

पृष्ठ संख्या

प्राक्कथन

प्रथम अध्याय

दिशा-दर्शन

1. सन्त शब्द व काव्य

1.1.1	सन्तों के लक्षण	1
1.1.2	ऐतिहासिक परम्परा	1
1.1.3	सन्त काव्य शीर्षक की उपयुक्तता	2
1.1.4	हिन्दी और मराठी के साहित्येतिहासों में सन्त शब्द व काव्य	2
1.1.5	मराठी सन्तों का दृष्टिकोण	3
1.1.6	सगुण - निर्गुण विवेक	5

2. परम्परा प्रवर्तन

1.2.1	महाराष्ट्रीय सन्त-काव्य परम्परा	7
1.2.2	हिन्दी सन्तकाव्य परम्परा	8
1.2.3	नामदेव का ऐतिहासिक महत्व	9
1.2.4	नामदेव का साहित्यिक महत्व	10
1.2.5	हिन्दी सन्त काव्य परम्परा के प्रवर्तन का श्रेय	11

3. मराठी और हिन्दी सन्त-काव्य में साम्य

1•3•1	अद्वैत व भक्ति में समन्वय	12
1•3•2	निर्गुण व सगुण में समन्वय	13
1•3•3	माधुर्यभाव की अनुभूति	14
1•3•4	गुरु-महिमा	14
1•3•5	योग-साधना की स्वीकृति	15
1•3•6	मानवतावाद की स्थापना	15

4. मराठी और हिन्दी सन्त-काव्य में वैषम्य

1•4•1	लीला-वर्णन	16
1•4•2	कर्मकाण्ड की मूढ़ता	16
1•4•3	कर्मयोग की प्रधानता	17
1•4•4	मुक्ति से भक्ति श्रेष्ठ	17
1•4•5	वात्सल्य भक्ति-भावना	18

द्वितीय अध्याय

"काल-निर्णय एवं युगीन वातावरण"

1. काल-निर्णय –

2•1•1	काल-निर्णय नामदेव	21
2•1•2	कथा चिकित्सा	22
2•1•3	नामदेव और ज्ञानदेव की समकालीनता	24
2•1•4	नामदेव एक या अनेक	27
2•1•5	निष्कर्ष	29

2. कबीर का काल

2•2•1	गुरु परंपरा जैदेव नामा	29
2•2•2	पद-आधृत जन्मतिथि निर्णय	29

	2•2•3	कबीर और रामानन्द की समकालीनता	31
	2•2•4	कबीर की निधन-तिथि	32
	2•2•5	निष्कर्ष	32
3•	युगीन वातावरण		
	2•3•1	ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	33
	2•3•2	सामाजिक वातावरण	36
	2•3•3	धार्मिक वातावरण	39

तृतीय अध्याय

"व्यक्तित्व व कृतित्व"

1•	नामदेव – व्यक्तित्व		
	3•1•1	आद्य आत्मपरिचय	45
	3•1•2	संस्कारी भक्त	47
	3•1•3	जाति	47
	3•1•4	आध्यात्मिक विकास के तीन सोपान	48
	3•1•5	अन्तरीचा कोरा गुरुविण	48
	3•1•6	अवघा पाहे जिकडे तिकडे देव	49
	3•1•7	अन्तरीचे गुज बोलो काही	51
	3•1•8	कीर्तन परम्परा के प्रवर्तक	53
	3•1•9	नाचू कीर्तनाचे रंगी	53
	3•1•10	नामदेव की समाधि	54
2•	कबीर व्यक्तित्व		
	3•2•1	जन्म काल स्थान	55
	3•2•2	जाति जुलाहा नाम कबीरा	56

	3.2.3	गुरु भिनिया रामानन्द	57
	3.2.4	गृहस्थ सन्त	60
	3.2.5	घुमक्कड़ साधु	60
3.	नामदेव कृतित्व		
	3.3.1	नामदेव गाथा की मुद्रित प्रतियाँ	61
	3.3.2	कर्म विषय	64
4.	हिन्दी पदों का कर्म विषय		
	3.4.1	अद्वैतवाद व सर्वात्मवाद	65
	3.4.2	निर्गुण भक्ति भावना	65
	3.4.3	नाम-महिमा	65
	3.4.4	गुरु व सन्त महिमा	66
	3.4.5	योग साधना	66
	3.4.6	बाह्याडम्बरों का विरोध	66
	3.4.7	रहस्य भावना	66
	3.4.8	अन्य प्रेम भावना	66
5.	कबीर - कृतित्व		
	3.5.1	कबीर वाणी के मुद्रित संकलन	67
	3.5.2	कर्म विषय	70
6.	संकलन परम्परा		
	3.6.1	सन्त परम्परा	71
	3.6.2	आदि ग्रन्थ की परम्परा	73
	3.6.3	पंथ परम्परा	74
7.	संगीत परम्परा		
	3.7.1	सन्तों की संगीत परम्परा	74
	3.7.2	हिन्दी गीति काव्य शैली के जनक	77
8.	निष्कर्ष		
	3.8.1	निष्कर्ष	77

चतुर्थ अध्याय

ब्रह्म - निरूपण

1.	ब्रह्म - तत्व		
	4.1.1	स्वरूप निर्धारण के तत्व	79
	4.1.2	परम्परा	80
2.	निर्गुण ब्रह्म		
	4.2.1	निर्गुण ब्रह्म "राम"	82
	4.2.2	परमतत्व - अव्यक्त	84
	4.2.3	सत्य, सर्वव्यापी	85
	4.2.4	सर्वान्तर्यामी	87
	4.2.5	सर्वोपाधिवर्जित, अनुपम	89
	4.2.6	अगम, अगोचर	90
	4.2.7	अनिर्वाच्य	91
	4.2.8	अद्वैत	94
	4.2.9	निराकार	100
	4.2.10	सगुणनिर्गुणातीत	101
	4.2.11	शून्य व सहज	102
	4.2.12	निरंजन	105
	4.2.13	ज्योतिस्वरूप	107
	4.2.14	शब्द ब्रह्म	108
	4.2.15	आश्चर्यमय रूप	111
3.	सगुण ब्रह्म		
	4.3.1	सगुण रूप	112
	4.3.2	विराट रूप	114

	4•3•3	भक्तवत्सल रूप	116
	4•3•4	अवतार रूप	117
	4•3•5	अवतार रूप की आलोचना	120
	4•3•6	आलोचना का रहस्य	123
4•	निर्गुण राम		
	4•4•1	निर्गुण राम की परम्परा	126
	4•4•2	नामदेव के निर्गुण राम	127
	4•4•3	कबीर के राम	129
5•	विट्ठल		
	4•5•1	नामदेव के इष्टदेव विट्ठल	130
6•	निष्कर्ष		
	4•6•1	निष्कर्ष	134

पंचम अध्याय

आत्मा एवं मुक्ति तत्व

1•	आत्मनिरूपण		
	5•1•1	आत्मनिरूपण की परम्परा	137
2•	आत्मतत्व		
	5•2•1	सर्वव्यापी आत्मतत्व	139
	5•2•2	आत्मा की स्वयं प्रकाशरूपता	141
	5•2•3	आत्मा की सूक्ष्मता	143
	5•2•4	आत्मा और ब्रह्म का सम्बन्ध	144
	5•2•5	आत्मा व ब्रह्म की अद्वैतता	148

	5•2•6	आत्मा और प्राण	147
	5•2•7	आत्मा और मन	149
	5•2•8	आत्मा और सुरति	153
3•	निष्कर्ष		
	5•3•1	निष्कर्ष	156
4•	मुक्ति		
	5•4•1	मुक्ति की परिभाषा	157
	5•4•2	मुक्ति के भेद	158
	5•4•3	जीवन्मुक्ति	159
	5•4•4	विदेहमुक्ति	161
5•	निष्कर्ष		
	5•5•1	निष्कर्ष	164

छट्ट अध्याय

माया - स्वरूप - विवेचन

1•	माया -		
	6•1•1	माया विवेचन	165
	6•1•2	मायावाद की परम्परा	165
2•	माया - स्वरूप		
	6•2•1	माया के दो रूप	168
	6•2•2	ब्रह्म की छलन भ्रामक शक्ति	168
	6•2•3	त्रिगुणात्मिका	170
	6•2•4	व्यापकता	172
	6•2•5	आकर्षणशीलता	173

6.2.6 माया का बेली रूप 174

3. माया और मन

6.3.1 मायासक्त मन 175

4. जगत

6.4.1 जगत

6.4.2 ईश्वर की इच्छाशक्ति 179

6.4.3 जग की असारता 181

5. माया और ब्रह्म

6.5.1 माया और ब्रह्म का संबंध 185

6. निष्कर्ष

6.6.1 निष्कर्ष 187

सप्तम अध्याय

"साधनात्मक - पक्ष"

खण्ड "व" - "योग"

1. योग -

7.1.1 परम्परा 188

7.1.2 योग और भक्ति का सम्बन्ध 189

7.1.3 योग और भक्ति समन्वित सम्प्रदाय 190

7.1.4 योग का अर्थ 192

2•	योग साधना		
	7•2•1	योग साधना के मूल-तत्त्व	193
	7•2•2	पिंड व ब्रह्मांड की एकता	194
	7•2•3	हठयोग	194
	7•2•4	लययोग	196
	7•2•5	सहजयोग	198
3•	योगपरक रूपक व उलटबांसियाँ		
	7•3•1	अवधूत	201
	7•3•2	अजपाजाप	201
	7•3•3	अष्टकमल	202
	7•3•4	संयम	202
	7•3•5	उलटबांसी	202

<u>खण्ड- "ब" - "भक्ति"</u>

4•	भक्ति		
	7•4•1	भक्ति का अर्थ	205
5•	भक्ति के उद्भावक तत्त्व		
	7•5•1	गुरु तत्त्व	206
	7•5•2	गुरु कृपा	211
	7•5•3	साधु संगति	213
6•	भक्ति के अनुभाव		
	7•6•1	बाह्याचारों से विरक्ति	216

	7•6•2	कथनी व करनी में एकरूपता	220
7•	भावभक्ति		
	7•7•1	भावभक्ति	222
	7•7•2	निष्कामता	223
8•	नाम-भक्ति		
	7•8•1	नाम-भक्ति	224
	7•8•2	नामदेव का नामभेद	226
	7•8•3	नाम-तत्त्व	228
	7•8•4	नाम साधना	232
9•	प्रेम-भक्ति		
	7•9•1	प्रेम भक्ति	234
	7•9•2	अनन्य भाव	235
	7•9•3	विरह-भाव	237
	7•9•4	मिलन	240
	7•9•5	लीला	242
10•	प्रपत्ति		
	7•10•1	प्रपत्ति	243
11•	नाम भक्ति		
	7•11•1	सन्तों की नाम भक्ति	246
	7•11•2	सहज साधना	249
	7•11•3	भक्ति व लौकिक कार्य की एकता	252
	7•11•4	निष्कर्ष	253
	उपसंहार		255
	सहायक ग्रन्थ सूची		268

प्राक्कथन

प्राक्कथन

मध्ययुग में देशव्यापी भक्ति आन्दोलन का प्रवर्तन, पृष्ठपोषण और पथ-प्रदर्शन सामान्यतः दक्षिण के आचार्यों, सन्तों, भक्तों द्वारा हुआ। भक्ति की इस सुर सरिता ने समस्त भारत को आप्लावित किया और 6 ठी से 18 वीं सदी तक देश की समस्त आधुनिक भाषाएं भक्तों के भाव-विभोर उच्छ्वासों से अनुप्राणित हुई। हिन्दी में भक्ति-काल का आरम्भ सन्त काव्य से माना जाता है।

हिन्दी सन्त काव्य परंपरा में कालानुक्रम से नामदेव का स्थान प्रथम है। हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल का अध्ययन और अध्यापन करते हुए इस तथ्य की ओर ध्यान आकृष्ट हुआ कि उन्हें इतिहासकारों द्वारा समुचित गौरव प्रदान नहीं किया गया। आज भी उनसे परवर्ती सन्त कबीर को ही इस परम्परा का प्रवर्तक माना जाता है, और हिन्दी साहित्य के पाठकों को भी कबीर अधिक आत्मीय प्रतीत होते हैं। सम्भवतः इसी कारण नामदेव अनुसन्धित्सु और आलोचकों द्वारा उपेक्षित रहे। कबीर पर सभी दृष्टियों से आलोचनात्मक अध्ययन हुआ है पर नामदेव सम्बन्धी सन् 1970 के पूर्व कोई स्वतन्त्र आलोचना उपलब्ध नहीं।

इसके अतिरिक्त आज भी हिन्दी साहित्य के अध्येता नामदेव को मराठी का सगुण कवि मानते हैं। नामदेव साहित्य के अल्पज्ञान व एकांगी अभ्यास के कारण सम्भवतः यह भ्रान्ति उत्पन्न हो गई। इसी परिस्थिति में नामदेव साहित्य के अध्ययन की जिज्ञासा जागृत हुई।

नामदेव के साहित्य का अध्ययन करते हुए इस धारणा की पुष्टि हुई कि सन्त नामदेव निर्गुणोपासक भी हैं अतः उन्हें सन्त काव्य परम्परा के प्रवर्तन का श्रेय दिया जाना चाहिए । इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर नामदेव और कबीर की दार्शनिक विचारधारा के तुलनात्मक अध्ययन की योजना बनायी गयी और इसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए उभय कवियों की कृतियों का दार्शनिक मूल्यांकन करने का प्रयास इस शोध-प्रबन्ध में नवीनतम परिप्रेक्ष्य में किया गया है ।

कबिर की दार्शनिक विचारधारा का अध्ययन दर्शन के सिद्धान्त व साधना पक्षों के आधार पर परम्परा के प्रकाश में किया गया है और कबीर की पूर्व-परम्परा में नामदेव स्थापित किये गये हैं । यद्यपि इस प्रबन्ध में हमारा मुख्य लक्ष्य इन दो सन्त कवियों की दार्शनिक विचारधाराओं का तुलनात्मक अध्ययन ही प्रस्तुत करना है पर इस प्रयास में नामदेव कबीर की पूर्व की परम्परा में सहज ही स्थापित हो गये हैं ।

सात अध्यायों में आयोजित इस प्रबन्ध के प्रथम अध्याय में मराठी और हिन्दी सन्त काव्य की अविच्छेद परम्परा की पुष्टि करते हुए दोनों भाषाओं के सन्त काव्य के साम्य और वैषम्य पर प्रकाश डाला गया है । हमने यहाँ दो भाषाओं की ओर संकेत मात्र होकर किया है क्योंकि नामदेव मूलतः मराठी के कवि हैं ।

इस परम्परागत सम्बन्ध के आधार पर द्वितीय अध्याय में सन्तत्व के कालनिर्णय के अनुसार नामदेव कबीर से पूर्ववर्ती सिद्ध होते हैं और साथ ही युगीन परिस्थितियों का विश्लेषण किया गया, क्योंकि युगीन चेतना ही कवि को प्रभावित व प्रेरित करती है ।

आगामी तृतीय अध्याय में कविद्वय के जीवन और साहित्य का दिग्दर्शन किया गया है । संकलन-परम्परा तथा संगीत परम्परा की दृष्टि से भी यहाँ उनके साहित्य का महत्त्व स्थापित किया गया है ।

उभय कवियों की प्रामाणिक कृतियों के आधार पर चतुर्थ से षष्ट अध्याय तक ब्रह्म, आत्मा व मुक्ति, माया व जगत् इन शीर्षकों के अन्तर्गत दोनों की सैद्धान्तिक विचारधारा का विश्लेषण प्रस्तुत किया है ।

सप्तम अध्याय में उनके साधना-पक्ष पर प्रकाश-क्षेपण हुआ है । योग, भक्ति व ज्ञान इन तीन खण्डों में विभाजित विस्तृत विवेचन से इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि यद्यपि नामदेव कबीर से कुछ पूर्ववर्ती अवश्य थे, पर दोनों की निर्गुणभक्ति में बहुत दूर तक साम्य है ।

अन्त में इस शोध प्रबन्ध की उपलब्धि का आकलन यही है कि दार्शनिक विचारधारा की दृष्टि से नामदेव निर्गुणोपासक सिद्ध होते हैं और कबीर के पूर्ववर्ती होने के कारण हिन्दी सन्तों की सहज-साधना का प्रमुख प्रवेश द्वार नामदेव की वाणी ही है जिससे कवि, भक्त, निर्भीक प्रचारक के रूप में सन्त कबीर को निखार मिला होगा ।

प्रस्तुत प्रबन्ध श्रद्धेयास्पद डा० रामनिरंजन पाण्डेय, एम०ए० (हिन्दी, संस्कृत, दर्शनशास्त्र) पी०एच०डी०, भूतपूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय के निर्देशन में सम्पन्न हुआ । इस शोध प्रबन्ध में जितने सारग्राही तत्त्व हैं वह उनकी अनन्त दिव्य दृष्टि और प्रेरणा के परिणाम हैं । वे अपने संत स्वभाव से सदा मेरे प्रेरणा स्रोत रहे । उनके प्रति आभार की औपचारिकता अनिर्वचनीय है ।

हिन्दी विभाग उस्मानिया विश्वविद्यालय के गुरुवर्य डॉ॰ राजकिशोर पाण्डेय, भू॰पू॰ अध्यक्ष तथा डॉ॰ रामकुमार खण्डेलवाल अध्यक्ष॰ एवं प्रोफेसर, डॉ॰ श्रीरामशर्मा, प्रोफेसर, डॉ॰ भान अस्थाना, रीडर, डॉ॰ विद्यासागर, रीडर एवं डॉ॰ भीमसेन निर्मल, रीडर के समय-समय पर दिये हुए सत्परामर्शों के लिए मैं सबकी हृदय से अनुगृहीत हूँ ।

इसके अतिरिक्त डॉ॰ श्री॰ र॰ कुलकर्णी, भूतपूर्व अध्यक्ष, मराठी विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय, की आभारी हूँ जिन्होंने अपने अमूल्य सुझावों से मुझे उपकृत किया और श्री द॰दा॰कुलकर्णी, अध्यक्ष, मराठी विभाग, उस्मानिया वि॰ वि॰ का भी सौहार्दपूर्ण सहायता के लिए हार्दिक धन्यवाद ।

इसके साथ ही उस्मानिया विश्वविद्यालय की यू॰ जी॰ सी॰ यूनिट की "फैकल्टी इम्प्रूवमेन्ट प्रोग्राम" के अन्तर्गत प्राप्त सुविधा के लिए नामनिर्देश न करते हुए उससे सम्बद्ध सभी अधिकारियों के प्रति आभार प्रदर्शन अपना कर्तव्य समझती हूँ ।

अन्त में अपने पूज्य पिताजी स्वर्गीय गिरराव केतकर की इच्छा-पूर्ति का भी समाधान होता है ।

भावात्मक एकता के इस युग में इस प्रकार के अध्ययन द्वारा भारतीय संस्कृति की मौलिक एकात्मता की पुष्टि होती है और प्रचार भी होता है ।